मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

जो आज साहिबे मसनद हैं
कल नहीं होंगे
किराएदार हैं
ज़ाती मकान थोड़ी है

सभी का खून है शामिल
यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का
हिन्दोस्तान थोड़ी है

एम्स आज खुद बीमार 3
उधम सिंह का मुकद्दमा 4
गौ रक्षक बनाम गौ बालक 5
मेडिकल कॉलेज से बेखबर 8

वर्ष 31 अंक -31 फ़रीदाबाद 29 जुलाई-4 अगस्त 2018 फोन : - 9999595632 ₹ 2.50

घर में नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने

न बिल्डिंग न टीचर, नये कॉलेज खोलेंगे खट्टर

फ़रीदाबाद (म.मो.) पांखड की नीवं पर शिक्षा का मंदिर कैसे आनन-फ़ानन में खट्टर सरकार ने हरियाणा में 31 नये महिला कॉलेज खोलने का फ़ैसला किया और उसे इसी साल से लागू कर दिया। प्रसाद में फ़रीदाबाद ज़िले के हिस्से में भी तीन कॉलेज आये। नचौली, सैक्टर 2 (बल्लबगढ़) और मोहना। दाखिले शुरू होने तक इन कॉलेजों की हालत ये थी कि न किसी प्राध्यापक की यहां तैनाती की गयी थी, न बिल्डिंग थी।

और दाखिलों के वक्त कोई बच्चा नचौली और मोहना में तो दाखिला लेने को भी तैयार नहीं था। नचौली में तो लाख झूठ बोलकर भी प्रिंसिपल भगवती 46 बच्चे ही जमा कर पाई जबकि ये एकमात्र नया कॉलेज है जिसकी बिल्डिंग बनने लग रही है। अब नये दाखिले होने के बाद इन कॉलेजों की दुबारा खोज-खबर ली गयी।

सैक्टर दो के कॉलेज में कुल 260 सीटें स्वीकृत की गयी थीं जिनमें से 140 सीटें भरी गयीं। यहां दो नये नियमित प्राध्यापक नियुक्त कर दिये गये हैं। (भौतिक विज्ञान व इतिहास) तथा चार विषयों, राजनीतिशास्त्र, कॉमर्स, अर्थशास्त्र व होमसाईंस के प्राध्यापक तिगांव, नेहरू कॉलेज और महिला कॉलेज से टुकड़ों में पढाने आयेंगे, यानी हफ़्ते में दो या तीन

मुख्यमंत्री खट्टर और शिक्षा मंत्री राम बिलास : न शिक्षा के प्रति ईमानदारी और न विद्यार्थी के प्रति वफादारी!

दिन। बाकी दिन वे अपने कॉलेजों में पढायेंगे।

स्थानीय एम.एल.ए. मूलचंद और तिगांव की प्रिंसिपल श्रीमती संध्या, जो कि यहां का भी कार्यभार संभाले हुये हैं के प्रयासों से इस कॉलेज को राजकीय आदर्श कन्या विद्यालय बल्लबगढ़ में 10 कमरे दिये गये। भैतिकी और कम्प्यूटर की लैब भी तैयार हो गयी हैं। ये अलग बात है कि कॉलेज को 10 कमरे देने के लिये स्कूल को दो शिफ़्टों में चलाना पड़ेगा जिससे यहां पढ़ने वाली लड़कियों को कितनी परेशानी होगी इसका अंदाज़ा ऊपर बैठे अफ़सरों को नहीं है। उनके लिये स्कूल की लड़कियां 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ' में शामिल नहीं हैं, सिर्फ़ कॉलेज की लड़कियां है।

मोहना महिला कॉलेज में 100 के करीब बच्चों ने दाखिला लिया है। यहां भी न तो कॉलेज की कोई बिल्डिंग है और न ही निकट भविष्य में बनने की सम्भावना है। फ़िलहाल यह कॉलेज भी मोहना के सरकारी स्कूल से चलाया जायेगा। स्कूल के बच्चे जायें भाड़ में। इस कॉलेज को नेहरू कॉलेज फ़रीदाबाद की प्रिंसिपल श्रीमती प्रीता संभालेंगी। यहां दो नये प्राध्यापकों की नियुक्ति की गयी है, बाकी दिहाड़ीदारों से काम चलाया जायेगा।

नचौली में 80 बीए और 80 बी कॉम की कुल मिलाकर 160 सीटें हैं, जबकि घेर घोटकर सिर्फ़ 46 बच्चों को ही भर्ती कर पाये हैं। इस कॉलेज की बिल्डिंग बनने लग रही है और लगभग 40 प्रतिशत काम पूरा बताया गया। लेकिन मजे की बात है कि कोई भी छात्रा नचौली नही पढना चाहती। उनको यह झूठ बोलकर बहकाया गया कि उनकी कक्षायें फ़रीदाबाद में ही लगेंगी।

अब प्रिंसिपल भगवती तो अपना उल्लू सीधा करके इस साल दिसम्बर में रिटायर होकर चली जायेंगी फ़िर बच्चे अगले साल खाओ धक्के नचौली के। न कोई आने जाने की व्यवस्था है और न ही लड़कियों की सुरक्षा की। ध्यान रहे कि नचौली में दाखिला लेने वाली ज्यादातर लड़कियां फ़रीदाबाद की हैं न कि नचौली की। उधर नचौली में किसी नये प्राध्यापक की भी नियुक्ति नहीं हुई है।

नचौली के सरपंच ने यह भी बताया कि वे तो यहां लॉ कॉलेज खुलवाना चाहते थे लेकिन सरकार ने उनकी नहीं सुनी और महिला महाविद्यालय खोल दिया। अब यहां के आस-पास के गांवों से मिलाकर 100 लड़कियां भी 12 वीं पास नहीं हुई हैं तो इस कॉलेज में दाखिला लेगा कौन।

जाहिर है कि फ़रीदाबाद की लड़कियों ने ही नचौली के कॉलेज में दाखिला लिया होगा और फ़िर अगले साल से या तो वे रोती-पीटती नचौली आयेंगी या फ़िर अच्छी सिफ़ारिश होगी तो फ़रीदाबाद महिला कॉलेज में कक्षायें लगवा लेंगी। इनकी पढ़ाई का सारा भार राजकीय महाविद्याल के प्राध्यापकों पर ही होगा। दोनों ही स्थितियों में नया कॉलेज खोलने का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। यह भी सुनने में आया है कि जिन नये कॉलेजों में छात्राओं की संख्या 100 से कम होगी उनको बन्द कर दिया जायेगा। ऐसी स्थिति में नचौली कॉलेज की छात्राओं का क्या होगा, यह चिन्ता का विषय है।

स्पष्ट है कि खट्टर सरकार बिना कोई पैसा खर्च किये पुण्य कमाना चाहती है। पूरे देश में ढिंढोरा पीटना चाहती है कि वह महिलाओं की शुभचिंतक है जबकि वह छात्राओं की परेशानी का सबब है। न प्राध्यापक नियुक्त करेंगे न बिल्डिंग बनायेंगे पर ढिंढोरा पीटने को कॉलेज जरूर खोलेंगे। घर में नहीं हैं दाने, अम्मा चली भुनाने।

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल ब्लड बैंक का खुन्दक खाये ड्रग इन्स्पेक्टर ने रोका लाइसेंस

फ़रीदाबाद (म.मो.) करीब 5 लाख मज़दूरों को चिकित्सा सेवा प्रदान करने वाले ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज अस्पताल ने अपने मरीज़ों को चिकित्सा सुविधायें प्रदान करने के लिये विशेषज्ञ डॉक्टरों व अन्य आवश्यक स्टाफ़ के अतिरिक्त करोड़ों रुपये के आधुनिक उपकरण एवं मशीनें आदि स्थापित किये हैं। इसी श्रृंखला में एक बेहतरीन एवं आधुनिकतम ब्लड बैंक भी स्थापित किया गया है। ऐसा उत्कृष्ट ब्लड बैंक हरियाणा भर में शायद ही कोई और हो।

ब्लड बैंक के लिये आवश्यक शर्तों एवं औपचारिकताओं की जांच करके लाइसेंस देने का अधिकार हरियाणा सरकार के पास है। इस काम के लिये ड्रग्ज़ कंट्रोलर का महकमा है जो राज्य भर के तमाम दवा विक्रेताओं तथा स्टॉकिस्टों की जांच पड़ताल के नाम पर मंथली वसूलता है। इसी विभाग का एक इन्स्पेक्टर गोदारा है जिसका कार्यालय सेक्टर 30 में है। गोदारा ने ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल के ब्लड बैंक का पहला निरीक्षण जनवरी 2018 में किया था। इस दौरान निरीक्षण टीम ने कुछ छोटी-मोटी कमियां बताईं जिन्हें तुरंत पूरा करके पुनर्निरीक्षण हेतु आवेदन कर दिया जिस पर मार्च 2018 में यही टीम आई और ब्लड बैंक को पास करके लाइसेंस जारी करने की सिफ़ारिश कर दी।

इसके बाद इस अस्पताल ने खून से प्लेटलेट्स व प्लाज़्मा अलग करने की मशीनें तथा कुछ अन्य मशीनें लगाईं जो मरीज़ों को बेहतर चिकित्सा सुविधा देने के लिये जरूरी थीं। इन उपकरणों के साथ ब्लड बैंक का निरीक्षण करने पुन: यही टीम जून 2018 में आई। इस बार टीम के सरगना गोदारा का मिजाज बिल्कुल उखड़ा हुआ था। वह बात-बात पर खाऊं-खाऊं कर रहा था। अस्पताल अधिकारियों, जो अति वरिष्ठ डॉक्टर होते हैं, से सीधे मुंह बात तक नहीं कर रहा था। अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में उसने बे सिर पैर की 21 आपत्तियां लगा दीं। सबसे हास्यासपद बात तो यह थी कि जो औपचारिकतायें मार्च के निरीक्षण में पूरी की जा चुकी थीं उन्हीं पर इस बार आपत्तियां लगा दीं।

ब्लड बैंक में लगे तमाम उपकरण खास कर प्लेटलेट्स व प्लाज़मा अलग करने वाले, डेंगू व चिकनगुनिया मरीज़ों के लिये जीवन दायनी हैं। ईएसआई निगम ने करोड़ों रुपये खर्च करके ये उपकरण इस लिये लगाये हैं ताकि आने वाले डेंगू सीजन में मरीज़ों को बेहतर चिकित्सा सुविधा दी जा सके। उन्हें प्राइवेट अस्पतालों के धक्के न खाने पड़ें। परन्तु गोदारा को इससे क्या लेना-देना, उसे तो अपनी अकड़ दिखाने से मतलब है, कोई मरता है तो मरे, उसकी बला से।

शुरू में तो गोदारा की इस अभद्रता का कारण किसी की समझ में नहीं आया, लेकिन जब किसी ने गोदारा से पूछ ही लिया तो पता चला कि मार्च में उसने डीन को किसी स्टाफ़ नर्स के तबादले की सिफ़ारिश की थी। डीन ने उसे उसी वक्त समझा दिया था कि यह तबादता उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है, फ़िर भी वे कोशिश करेंगे। डीन ने कोशिश की भी लेकिन बात बनी नहीं। बस इसी खुंदक में गोदारा उछला-उछला फ़िरता रहा। वैसे यह रहस्य भी किसी से छिपा नहीं है कि प्राइवेट संस्थानों में गोदारा व उनकी टीम निरीक्षण के नाम पर खासी वसूली करती है। परन्तु ईएसआईसी जैसे सरकारी संस्थान वाले तो चाय भी पिला दें तो बहुत समझो। ऐसे में गोदारा ने एक नर्स को फ़रीदाबाद से गुड़गांव तबादला कराने की मांग कर डाली। वैसे आजकल तबादला भी अपने आप में एक उद्योग का दर्जा ले चुका है।

70-80 हजार मासिक वेतन पाने वाला गोदारा एक बढ़िया निजी कार व प्राइवेट ड्राइवर रखता है। आज के जमाने में निजी कार और वह भी निजी ड्राइवर के साथ इस वेतन में रखना कतई संभव नहीं। यह तभी संभव हो सकता है जब ऊपर की कमाई की जाय। इस काम के लिये फ़रीदाबाद से ज़्यादा बढिया हरियाणा में तो कोई और जगह है नहीं। इस लिये बीते बीसियों वर्ष से गोदारा यहीं अपने पंजे गाड़े बैठा है।

उसके शिकार तमाम बड़े-छोटे निजी अस्पतालों के अलावा छोटे से बड़े तमाम दवा विक्रेता व निर्माता कम्पनियां हैं। इन से मासिक उगाही का जिम्मा भी उसी के प्राइवेट ड्राइवर के पास है। इतनी 'ऊपजाऊ' जगह पर अपनी तैनाती बनाये रखने व लूट-मार कायम रखने के लिये सरकार के उच्चतम स्तर तक पकड़ बनाये रखना अति आवश्यक होता है और यह पकड़ तभी बनती है जब लूट का हिस्सा ऊपर तक पहुंचाया जाय।

शर्म उनको मगर आती नहीं, ज़रा भी आती तो इस जल भराव में डूब मरते

फ़रीदाबाद (म.मो.) वीरवार की शाम को एक टीवी चैनल ने स्मार्ट सिटी का एक जादुई अंडरपास दिखाया। इसमें दिखाया गया कि एक आदमी गर्दन तक पानी में डूबा हुआ चला आ रहा है। बाहर निकला तो वह एक मोटर साइकिल थामे हुये था। ऐसे ही फ़िर एक और आदमी गर्दन तक डूबा बाहर की ओर चला आ रहा था, पानी से निकला तो वह एक सब्ज़ी की रिक्शा थामे था जिसकी सारी सब्ज़ी जादुई अंडरपास में लुप्त हो गयी थी।

यह जादुई अंडरपास और कहीं नहीं ओल्ड फ़रीदाबाद चौक से एनआईटी को जोड़ने वाला रेलवे अंडरपास है। इसके बनने में 6 वर्ष से अधिक समय व 30 करोड़ से अधिक रुपये लगे थे। इसे 'हूडा' के चोर अफ़सरों ने बना कर अब नगर निगम के जेबकतरे अफ़सरों को सौंप रखा है। बरसों से हर बारिश में यहां ऐसा ही जादू होता आ रहा है परन्तु न तो किसी अफ़सर को शर्म है और राजनेताओं का तो शर्म से कोई ताल्लुक होता ही नहीं। उनका तो जुमला ही है, ''जिसने की शरम उसके फूटे करम।''

गत दो माह से शहर भर के नालों की सफ़ाई का ढोल पीटने वाले शासन-प्रशासन के दावों की पोल यूं तो बीते एक माह में कई बार खुल चुकी है, परन्तु इसके बावजूद भी ये लोग कुछ करने-धरने को तैयार नहीं। करीब तीन सप्ताह पूर्व हुये जलभराव से ट्रैफ़िक जाम को लेकर पुलिस विभाग ने 10-12 विशेष स्थान चिन्हित किये थे जिनको दुरुस्त किये जाने भर से शहर को ट्रैफ़िक जाम से निजात मिल सकती थी। परन्तु किसी महकमे के कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

अनखीर पुलिस चौकी की ओर से राजमार्ग (मथुरा रोड) की ओर जाने वाली सड़क पर 2-3 किलोमीटर का जाम लगा है केवल इस लिये कि बड़खल रेलवे फ़लाई ओवर से राजमार्ग पर उतरते वक्त पानी भरा खड़ा है। इससे दिल्ली की ओर जाने वाले, सीधे 29 सेक्टर जाने वाले व बल्लबगढ़ की ओर जाने वाले, तमाम वाहन जाम में फ़से रहते हैं।

इसी तरह सेक्टर 15 ए में डीसी व सैशन जज निवास की सड़कें पूरी तरह से तालाब बनी हुयी हैं। लेकिन यहां जल निकासी के लिये पंपसेट लगा कर पानी को सीवर लाइन में डाला जा रहा है। हर साल यहां यही तमाशा होने के बावजूद इसका कोई स्थाई समाधान नहीं किया जा रहा। अन्य सेक्टरों, सड़कों व कॉलोनियों की दुर्दशा बयान करने के लिये तो काफ़ी काग़ज़ काले करने पड़ेंगे, लेकिन शासन-प्रशासन की मोटी चमड़ी पर इसका कोई असर नहीं। पूरी तरह से बेशर्म हो चुके हैं ये लोग।